विशिष्ट बालकों के विकास हेतु गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित शैक्षिक गतिविधियों का अध्ययन

डॉ. गिरिजा रौतेला

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध विशिष्ट बालकों के विकास हेतु गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित शैक्षिक गतिविधियों का अध्ययन पर आधारित है. अध्ययन के उद्देश्य **1.** विशिष्ट बालकों के विकास के लिए गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित संज्ञानात्मक विकास सम्बन्धी गतिविधियों का अध्ययन करना। **2.** विशिष्ट बालकों के विकास के लिए गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित भावात्मक विकास सम्बन्धी गतिविधियों का अध्ययन करना। **3.** विशिष्ट बालकों के विकास के लिए गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित मनोगत्यात्मक विकास सम्बन्धी गतिविधियों का अध्ययन करनाए है। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में कुमाऊँ मण्डल के मंगलदीप संस्थान तथा सृजन स्पैस्टिक संस्थान का सोद्देश्य न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया। प्रदत्त संकलन स्वनिर्मित उपकरण सूचना पपत्र साक्षात्कार अनुसूची अवलोकन अनुसूची द्वारा किया गया। प्रदत्तों को विषयवस्तु विश्लेषण के माध्यम से विश्लेषित किया गया। निष्कर्ष पाया गया कि दोनो संस्थानो में संज्ञानात्मक पक्ष के विकास सम्बन्धी उपवर्गों – दैनिक क्रियाकलापों, वातावरण सजगता एवं आधारभूत सम्प्रत्यय निर्माण सम्बंधित विविध गतिविधिया करायी जाती हैं भावात्मक विकास सम्बन्धी गतिविधिया में वातावरण के साथ समायोजन, आत्मविश्वास बढ़ाना, सीखने हेतु अभिप्रेरणा, मूल्य विकास, एवम संवेगों के प्रकटीकरण हेतु क्रियाऐं करायी जाती हैं मनोगत्यात्मक विकास सम्बन्धी आयोजित गतिविधियों में दैनिक जीवन सम्बन्धी स्वस्थ आदतों का विकास एवम व्यावसायिक कौशल का विकास सम्बंधित विविध गतिविधिया करायी जाती हैं जो कि विकलांगता को ध्यान में रखकर उनकी उपयुक्तता के अनुसार कराई जाती है

प्रस्तावना

मनुष्य सतत विकासशील प्राणी है, वह वृद्धि एवं विकास के विभिन्न सोपानों से होकर गुजरता है। यह प्रक्रिया जन्म से पूर्व, माता के गर्भ से प्रारम्भ होकर जीवन पर्यन्त चलती है। विकास का यह क्रम शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था तथा वृद्धावस्था तक क्रमशः चलता रहता है। इन अवस्थाओं में उसका शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक एवं नैतिक विकास होता है। 20 वर्ष की आयु तक बालक के इन पक्षों में वृद्धि लगभग पूर्ण हो जाती है किन्तु विकास अनुभवों की निरन्तर प्राप्ति के साथ जीवनपर्यन्त चलता रहता है। बालक में तीव्र विकास विशेषतः दो अवस्थाओं में दृष्टिगत होता है। प्रत्येक बालक के व्यक्तित्व के सभी पक्षों के विकास में शिक्षा महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करती है शिक्षा एक ओर जहाँ बालक की आन्तरिक क्षमताओं, योग्यताओं का उच्चतम विकास करती है वहीं उसे समाज के साथ समायोजित भी करती है। शिक्षा सामान्यतः बालकों को घर और विद्यालयों में प्रदान की जाती है विद्यालय शिक्षा के वे सक्रिय एवं औपचारिक साधन हैं जो बालक के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक व सामाजिक पक्षों में पूर्व निर्धारित रूप से एवं योजनाबद्ध तरीके से विकास करते हैं। वास्तव में किसी भी राष्ट्र की प्रगति का निर्माण विधान सभाओं, न्यायालयों और उद्योगों में नहीं वरन् विद्यालयों में होता है।

बालक के संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं मनोगत्यात्मक विकास हेतु विद्यालय में अनेक प्रकार की पाठ्यक्रमीय व पाठ्यसहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जाता है

विद्यालय समाज का लघु रूप है प्रत्येक विद्यालय में समाज के विभिन्न वर्गों, समुदायों और परिवारों के बालक आते हैं जो सर्वथा एक दूसरे से भिन्न होते हैं। सामाजिक एवं आर्थिक विभिन्नता के अतिरिक्त सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भिन्नता बालक की जन्मजात नैसर्गिक योग्यताओं में होती है, कुछ बालक सामान्य बुद्धि वाले होते हैं, कुछ तीक्ष्ण बुद्धि और कुछ अल्प बुद्धि के होते है ऐसे बालकों में वैचारिक स्वभावगत और दृष्टिकोण सम्बन्धी विभिन्नताएं भी पाई जाती है। ऐसे बालक सामान्य बालकों से व्यक्तित्व के अन्य पक्षों में भी भिन्न होते हैं, कतिपय बालक सृजनशील होते है, कुछ विशिष्ट प्रतिभाओं से युक्त, कुछ समस्यात्मक व्यवहार वाले, तो कुछ अपराधी प्रवृत्ति के भी हो सकते हैं। इस प्रकार के सभी बालक जो शारीरिक, मानसिक व्यावहारिक, उपलब्धि और अधिगम की दृष्टि से सामान्य बालकों से भिन्न है उन्हें विशिष्ट या असाधारण बालक कहा जाता है विशिष्ट बालक वे होते हैं जो कि औसत बालकों से शारीरिक, मानसिक संवेगात्मक अथवा सामाजिक लक्षणों में इतनी मात्रा में भिन्न है कि अपनी अधिकतम क्षमता के विकास के लिए उन्हें विशेष शैक्षिक सेवाओं की आवश्यकता होती है।

अध्ययन का औचित्य

वर्तमान में केवल सरकार ही नहीं वरन् गैर सरकारी संगठन भी विशिष्ट बालकों के विकास के लिए प्रयास कर रहे हैं। सोशल जस्टिस एण्ड इम्पावरमेन्ट, गर्वनमेन्ट ऑफ इण्डिया के एक अध्ययन के अनुसार सम्पूर्ण राष्ट्र के अन्तर्गत 29 राज्यों में 850 गैर सरकारी संगठन विशिष्ट बालकों के संज्ञानात्मक, भावात्मक व मनोगत्यात्मक विकास हेतु प्रयासरत है। इन्हीं राज्यों में से उत्तराखण्ड भी विभिन्न संदर्भों में एक विशिष्ट राज्य है।

उत्तराखण्ड राज्य में इन बालकों के शैक्षिक विकास के लिए अनेक सरकारी व गैर सरकारी संगठन कार्यरत है। अपेक्षा यह है कि गैर सरकारी संगठन विशिष्ट बालकों के विकास हेतु विविध प्रयास कर रहे होंगे। ये विकास विशिष्ट बालकों के व्यवहार के किन पक्षों में हो रहे है? इन सभी प्रश्नों के उत्तर जानने हेतु अनुसंधात्री का शोध विशिष्ट बालकों के विकास हेतु गैर सरकारी संगठनों के शैक्षिक गतिविधियों का अध्ययन पर आधारित है.

अध्ययन के उद्देश्य

1. विशिष्ट बालकों के विकास के लिए गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित संज्ञानात्मक विकास सम्बन्धी गतिविधियों का अध्ययन करना।

2. विशिष्ट बालकों के विकास के लिए गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित भावात्मक विकास सम्बन्धी गतिविधियों का अध्ययन करना।
3. विशिष्ट बालकों के विकास के लिए गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित मनोगत्यात्मक विकास सम्बन्धी गतिविधियों का अध्ययन करना।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध की प्रकृति सर्वेक्षण विधि है। यह एक वर्णनात्मक अनुसंधान है।

प्रदत्तों के स्रोत

- गैर सरकारी संगठनों द्वारा प्रकाशित पैम्पलेट, कार्यालयी अभिलेख, वार्षिक रिर्पोट एवं अन्य प्रकाशित सामग्री।
- संगठनों के निर्देशक या अध्यक्ष।
- संस्थाओं में कार्यरत शिक्षकगण।
- संगठनों द्वारा संचालित क्रियाओं (गतिविधियों) एवं वास्तविक क्षेत्र–परिस्थितियाँ ।
- संस्थाओं में अध्ययनरत विशिष्ट बालकों के अभिभावक।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में कुमाऊँ मण्डल के मंगलदीप संस्थान तथा सृजन स्पैस्टिक संस्थान का सोद्देश्य न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया। ये संगठन विविध प्रकार के विशिष्ट बालकों (मानसिक मंदित, मूक–बधिर, दृष्टि बाधित, श्रृवण बाधित, बहु विकलांग) के विकास हेतु निरन्तर प्रतिबद्ध है।

प्रदत्त संकलन हेतु उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति गुणात्मक है इसमें विशिष्ट बालकों के विकास हेतु गैर सरकारी संगठनों द्वारा संचालित गतिविधियों हेतु अग्रलिखित उपकरणों का निर्धारण, निर्माण एवं प्रयोग कर प्रदत्त संकलित किये गये –

1. सूचना प्रपत्र
2. साक्षात्कार अनुसूची
3. अवलोकन अनुसूची

प्रदत्त विश्लेषण की प्रक्रिया

विविध प्रकार के उपकरणों की सहायता से वर्णनात्मक प्रदत्तों का विश्लेषण अनेक पदों में किया गया और शोध उद्देश्य के अनुसार उन्हें व्यवस्थित किया गया। वर्णात्मक प्रदत्तों के *विषयवस्तु विश्लेषण* के माध्यम से विश्लेषित किया गया

निष्कर्ष एवं विवेचना

उद्देश्य 1 – विशिष्ट बालकों के विकास के लिए गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित संज्ञानात्मक विकास सम्बन्धी गतिविधियों का अध्ययन करना।

विशिष्ट बालकों के संज्ञानात्मक विकास के अध्ययन हेतु चयनित गैर सरकारी संस्थाओं में आयोजित गतिविधियों को तीन उपवर्गों में विभाजित करके तीनों उपवर्गों से संबंधित विभिन्न गतिविधियों को चित्र 1 द्वारा प्रस्तुत किया गया है :

चित्र 1 संज्ञानात्मक विकास सम्बन्धी गतिविधियाँ

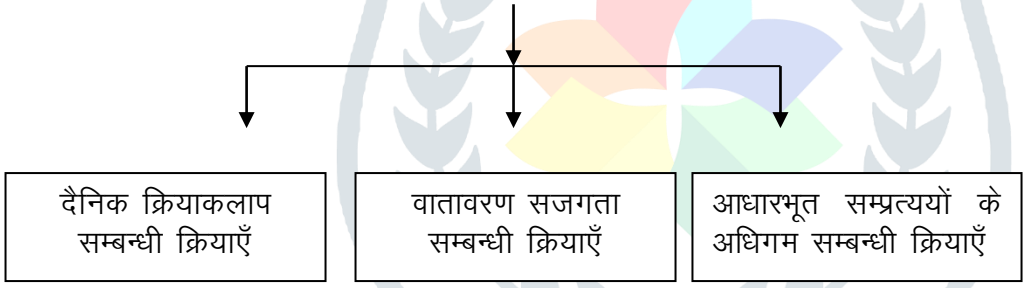

दैनिक क्रियाकलापों से सम्बन्धी क्रियाओं में साफ–सफाई, शौचालय सम्बन्धी घेरलू कार्य, सकल शारीरिक क्रियाओं (बिना सहायता के बैठना, बिना सहारे के साथ खड़े होना, फर्नीचर को ठीक प्रकार से रखने के लिए धकेलना, बैठना व चौकड़ी लगाना) व सूक्ष्म क्रियाओं की जानकारी दी जाती है।

वातावरण सजगता सम्बन्धी गतिविधियों में विभिन्न रास्तों की पहचान, स्वयं के नाम व अंगों की पहचान, दैनिक प्रयोग की वस्तुओं (चॉक, ब्लैक बोर्ड, बाल्टी मग इत्यादि) की पहचान, दिशाओं की पहचान, प्राकृतिक वस्तुओं की पहचान नित्य काम आने वाली वस्तुओं का रख–रखाव, स्वयं का नाम व तस्वीर पहचानना, एक स्थान से दूसरे स्थान में जाने हेतु गतिविधियाँ, विभिन्न ध्वनियों की पहचान, शरीर अंगों, भाषा व संकेतों की पहचान, ओष्ठ भाषा का ज्ञान दिया जाता है।

आधारभूत सम्प्रत्ययों के अधिगम सम्बन्धी क्रियाओं में सामान्य अंक गणना, अक्षरों का ज्ञान, छोटी बड़ी चीजों में अंतर की पहचान, रंगों की पहचान, हिन्दी, अंग्रेजी के वर्णमालाओं का ज्ञान, संख्याओं का

ज्ञान, दृष्टि बाधित बालकों को श्लोक, दोहे, कविताओं का ज्ञान, रुपया–पैसा, धन–मुद्रा इत्यादि की पहचान कराई जाती है।

उद्देश्य 2 विशिष्ट बालकों के विकास के लिए गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित भावात्मक विकास सम्बन्धी गतिविधियों का अध्ययन करना।

विशिष्ट बालकों के भावात्मक विकास हेतु चयनित गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं इस पक्ष से सम्बन्धित गतिविधियों को पांच उपवर्गों में विभाजित करके पाँचों उपवर्गों से सम्बन्धित विभिन्न गतिविधियों को प्रवाह चित्र द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है–

चित्र 2 भावात्मक विकास सम्बन्धी गतिविधियाँ

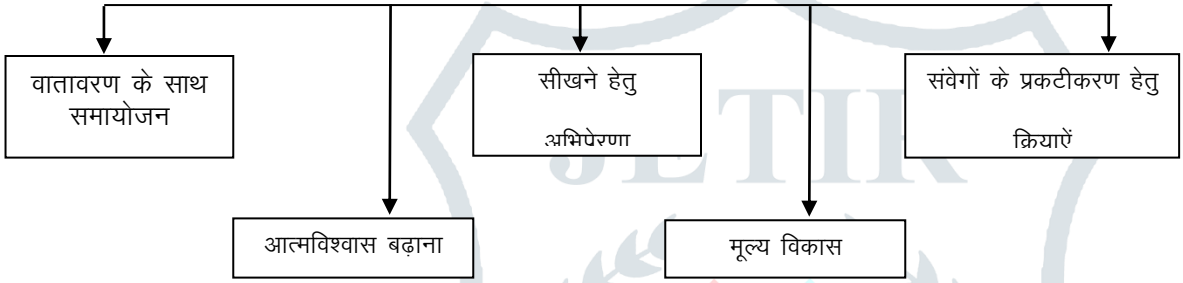

- **वातावरण के साथ समायोजन सम्बन्धी** गतिविधियों में विशिष्ट बालकों के आक्रमण व्यवहार को नियंत्रित करना, अपनी बारी का इंतजार करना, बालकों का समूह में बैठना, खेलना सिखाने हेतु गतिविधियाँ, विशिष्ट बालकों को माहौल में समायोजित करने हेतु अन्य बालकों से सम्पर्क बनाना, गतिविधियों में रुचि विकसित करना, समय सारणी का अनुसरण करना, कुसमायोजित व्यवहार को नियंत्रित करना, अन्य बालकों के साथ कुशल सम्प्रेषण करना, अपने काम (खाना, दिया गया कार्य) को समय पर समाप्त करवाने हेतु गतिविधियाँ कराई जाती है।

- **आत्मविश्वास बढ़ाने हेतु** सहपाठियों व अन्य व्यक्तियों के सामने अपनी बात रखना, अध्यापकों के सामने अपनी बात रखने सम्बन्धी गतिविधियाँ , विशिष्ट बालकों के अति आत्मविश्वास को नियंत्रित करना, पृथक व एकांत बालकों को समूह में बिठाना, नर्वस बालक को समूह में बिठाना, धीमी आवाज में बोलने वाले बालकों की आवाज तीव्र कराने हेतु गतिविधियाँ कराई जाती है।

- **सीखने हेतु अभिप्रेरणा** प्रदान करने हेतु विशिष्ट बालकों में एकाग्रता बढ़ाने, कक्षा में शांत बैठना सिखाना, अध्यापकों की बात ग्रहण करके प्रतिक्रिया देना, विभिन्न कार्यों जैसे – हस्तकला, संगीत, नृत्य, पढ़ाई इत्यादि में रुचि उत्पन्न करने, विशिष्ट बालकों को अभिप्रेरणा देने हेतु, प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित करने हेतु गतिविधियाँ कराई जाती है।

➢ **मूल्य विकास** हेतु बालकों में नैतिकता का विकास, बड़ों का आदर करना, समूह में सहयोग की भावना विकसित करना, अधिक आयु वर्ग के विशिष्ट बालकों का विभिन्न कार्यों में हाथ बँटाने, अतिथियों के आगमन पर सम्मान देना व व्यवस्था सम्बन्धी सहयोग की गतिविधियाँ कराई जाती है।

➢ **संवेगों के प्रकटीकरण** हेतु उग्र बालकों के नकारात्मक संवेगों की दिशा परिवर्तित करना, बालकों में सकारात्मक दृष्टिकोंण के विकास, गुस्से को खेल (मिट्टी के खिलौने बनाना, चित्रों में रंग भरना, स्कैच बनाने) के माध्यम से दिशा परिवर्तित करना, एकांत में बालकों को अपने मन की बात कहलवाना एवं नकारात्मक भावों को बदलने हेतु गतिविधियाँ कराई जाती हैं।

उद्देश्य 3 विशिष्ट बालकों के विकास के लिए गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित मनोगत्यात्मक विकास सम्बन्धी गतिविधियों का अध्ययन करना।

विशिष्ट बालकों के मनोगत्यात्मक विकास हेतु चयनित गैर सरकारी संगठनों द्वारा विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की जा रही है। इस पक्ष से सम्बन्धित गतिविधियों को दो उपवर्गों में विभाजित करके दोनों उपवर्गों से सम्बन्धित विभिन्न गतिविधियों को प्रवाह चित्र 3 द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है।

चित्र 3 मनोगत्यात्मक विकास सम्बन्धी गतिविधियाँ

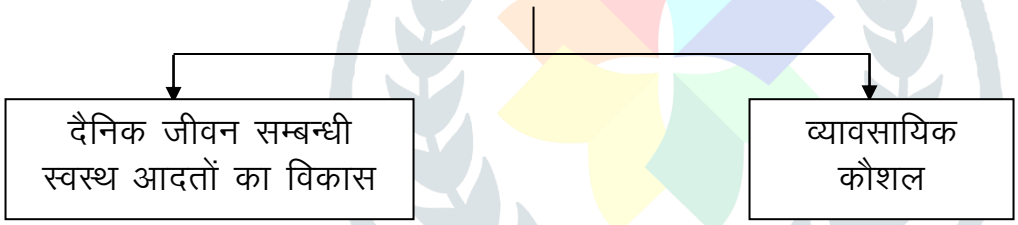

➢ **(प) दैनिक जीवन सम्बन्धी** कौशलों को विकसित करने हेतु अपने कपड़े स्वयं पहनना, जूते के फीते बाँधना, चीजों को यथास्थान रखना, साफ सफाई की आदतों का विकास, शौचालय जाने सम्बन्धी आदत, समय पर कार्य पूर्ण करने, गलत आदतों को छुड़वाने सम्बन्धी कौशलों के विकास, बालकों को नई आदतों (शिष्टाचार, सामाजिकता, समन्वय) के निर्माण हेतु क्रियाएँ कराई जाती है।

➢ **व्यावसायिक कौशल निर्माण** हेतु बालकों को कई व्यावसायिक क्रियाओं (मोमबत्ती बनाना, चॉक बनाना इत्यादि), संगीत व नृत्य कक्षाओं का संचालन, व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन (दलिया बनाना, होली के रंग बनाना, लेमिनेशन, बुक मार्क, पेकिंग, लिफाफे बनाना, झूला बनाना), व्यावसायिक क्रियाओं में अधिकतर बालकों को जोड़ना, स्वयं का व्यवसाय खोलने हेतु गतिविधियों का संचालन किया जाता है।

समेकन

संस्थानों में विशिष्ट बालकों के विकास हेतु, विविध प्रयास किए जा रहे हैं। मंदबुद्धि बालकों पर पढ़ाई जबरदस्ती नहीं थोपी जाती वरन् बच्चे की विकलांगता, क्षमता व रूचि को ध्यान में रखते हुए विविध प्रकार के प्रशिक्षण दिए जाते हैं। विशिष्ट बालकों के संज्ञानात्मक विकास हेतु अनेक गतिविधियाँ व विकास में अधिक बल दिया जाता है, बच्चे के भावात्मक विकास हेतु अत्यधिक प्रयास नहीं हो रहे हैं, इस पक्ष पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, संस्थानों में प्रेम व सहानुभूतिपूर्ण तरीके से कार्य कराया जाता है। मंगलदीप संस्थान में कतिपय गतिविधियाँ सृजन स्पैस्टिक की तुलना में अधिक कराई जाती है जैसे आत्मविश्वास जगाना, मूल्य विकास इत्यादि। इसके अलावा इस संस्थान में प्रशिक्षित बच्चों को अन्य व्यवस्था में भी संलग्न किया जाता है। इन संस्थाओं द्वारा बहुतया संभव गतिविधियाँ कराई जा रही हैं जो कि विशिष्ट बालकों के शैक्षिक विकास में अत्यधिक प्रभावशाली रही है किन्तु कतिपय कमियाँ भी शोधकर्त्री को दृष्टगत हुई जैसे मंगलदीप संस्थान में अधिक उम्र के विशिष्ट बालकों हेतु कोई विशेष गतिविधियाँ नहीं कराई जा रही तथा दृष्टि बाधित बच्चों के लिए विशिष्ट गतिविधियों का अभाव अधिक उम्र के विशिष्ट बालकों को युवा अध्यापिकाओं से दूर रखना इत्यादि। इसी प्रकार सृजन स्पैस्टिक संस्थान में भी कतिपय कमियाँ दृष्टगत हुई जैसे–उग्र विशिष्ट बालकों को कुर्सी से बाँधकर रखना, विशिष्ट बालकों को उनकी विकलांगता के अनुसार नहीं बल्कि उनकी आयु के अनुसार विभाजित करना, बच्चों के भावात्मक पथ पर अधिक बल ना देना, व्यावसायिक प्रशिक्षण में पर्याप्तता व विविधता का अभाव इत्यादि। अन्ततः कहा जा सकता है कि इन संस्थानों द्वारा विशिष्ट बालकों के विकास हेतु काफी विविध एवं सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं किन्तु कतिपय सुधार की आवश्यकता भी अपेक्षित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- **जैन, अनिता (2010).** *''रोल ऑफ वाफ्ड इन दि एज्यूकेशनल डवलपमैन्ट अूफ वूमन : ए केस स्टडी''.* शोध प्रबन्ध : वनस्थली विद्यापीठ शिक्षा संकाय.
- **ज्योथि, डी. (2000).** *''परसनैलिटी प्रोफाइल बॉल हियरिंग इम्प्यर्ड एण्ड नार्मल चिल्ड्रन''.* इण्डियन एज्यूकेशनल एबस्ट्रेक्ट्स. वॉल्यूम 2. नं. 1. जुलाई 2002. पृ. 72.
- **रेड्डी, जी. लोकनाथा. (2000).** *''रोल परफोरमेशन ऑफ स्पेशल एज्यूकेशन टीचर्स''.* इण्डियन एज्यूकेशनल एबस्ट्रेक्ट्स. वॉल्यूम 2. नं. 2. जुलाई 2002. पृ. 80–81.
- **सन्याल, कुमार. (1999).** *''ए कामप्रेटिव स्टडी ऑफ दि इफैक्टिवनैस : ए टीचिंग स्ट्रैटजी फोर दि विजुअली हैन्डीकेप्ट एज्यूकेशन मेंटली रिटार्डेड एण्ड साइनटेड* म्डत''. इण्डियन एज्यूकेशनल एबस्ट्रेक्ट्स. वॉल्यूम 4. नं. 1. जुलाई 2004. पृ. 69.
- **सिन्हा, एच.एस., शर्मा, रचना. (2004).** *''शिक्षा मनोविज्ञान''.* नई दिल्ली : एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स.
- **सिंह, डौली. (2010).** *''स्पेशल एज्यूकेशन नीड्स : स्ट्रेटजीज. गाइडलाइन एण्ड इनिसियेटिव''.* नई दिल्ली : कनिष्का डिस्ट्रीब्यूटर्स.
- **शर्मा, भारती. (2011).** *''इन्क्लूसिव एज्यूकेशन : नीड्स प्रैक्टिस एण्ड प्रोस्पेक्ट्स''.* नई दिल्ली : कनिष्का पब्लिर्शस् डिस्ट्रीब्यूटर्स.
- **शर्मा, विजय शंकर. (2012).** *''स्पेशल एज्यूकेशन''.* नई दिल्ली : ए.पी. एच. पब्लिशिंग कॉपरेशन.
- **हैरी, बाकर हेक., शर्मा, गंगाराम., भार्गव., शर्मा, मुकेश. (2006).** *''शिक्षा मनोविज्ञान''.* आगरा : एच.पी. भार्गव बुक हाउस